

पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए वृक्षों की आवश्यकता निर्विवाद रूप से है, आइए आगरा में सफल रूप से उगने वाले कुछ वृक्षों के सम्बन्ध में हम परिचय लें।

वृक्षों का परिचय

- 1. नीम:**—नीम के वृक्ष की आयु लगभग 50–60 वर्ष होती है। नीम के पौधों की बढ़त हेतु अच्छी जल निकास एवं नमी वाली भूमि चाहिए। नीम एक बड़ा पेड़ है और इसकी औसत ऊँचाई 15–20 मीटर होती है। यह एक अच्छा छायादार वृक्ष है। इसमें जनवरी माह में फल लगने शुरू हो जाते हैं और मानसून तक पक जाते हैं। बीज की अंकुरण क्षमता बहुत ही कम होती है। बीहड़ क्षेत्रों में नीम का रोपण सीधे बीज बुवाई द्वारा भी किया जा सकता है। एक वर्ष में 20–30 सेमी ऊँची पौध रोपण के लिए एकदम उपयुक्त होती है। इसके बीज से निकाला गया तेल (मारगोसा ऑयल) साबुन में उपयोग होता है। इसके पत्तियों एवं बीज से कीटनाशक पदार्थ (अज़ारडिक्टिन) निकाला जाता है। गाय, बकरी एवं ऊँट के लिए उपयुक्त चारा है। दांत साफ करने हेतु इसका दातून अत्यन्त उपयोगी है। यह वृक्ष ऊपरी तौर पर सूखे एवं पाले के प्रभाव को सहन कर लेता है। परन्तु इसकी जड़ें काफी संवेदनशील होती हैं। शीतकाल में इसकी जड़ों को क्षति पहुंचने से पौधा मर जाता है अथवा ऊपर से सूख जाता है।
- 2. इमली:**—इमली के वृक्ष की आयु लगभग 100 वर्ष तथा इसकी ऊँचाई 15–20 मीटर होती है। यह वृक्ष बहुत विशालकाय होता है। इसकी छाया व काया दोनों ही आकर्षक होती हैं। अप्रैल–मई में पतझड़ के साथ ही नयी पत्तियों का निकलना प्रारम्भ हो जाता है। अप्रैल व मई में फूल भी आने शुरु हो जाते हैं। इसकी फली नवम्बर में पकनी शुरु होती है और तब इसका रंग हरे से

भूरापन लेने लगता है। इमली पौध का रोपण बीज तथा नर्सरी द्वारा तैयार पौध से किया जा सकता है। इसकी पत्तियाँ चारे के काम आती हैं। इसकी लकड़ी से कोयला बनाया जाता है।

3. **पीपल:**—पीपल के वृक्ष की आयु लगभग 60–70 वर्ष होती है। यह पेड़ ज्यादातर मंदिरों के पास व सुन्दर छाया व चमकीली हरी पत्तियों के कारण किनारे, गांव–देहातों में व धार्मिक निष्ठा के तौर पर लगाया जाता है। पीपल एक विशाल वृक्ष है। हिन्दू लोक रीति और बौद्ध धर्म में भी पीपल का बहुत महत्व है। फल अप्रैल–मई के महीने में आते हैं। यह अक्सर दीवारों की दरारों अथवा पेड़ की खोह में स्वयं उग आता है। अपनी छाया व सुन्दरता के अतिरिक्त इस पेड़ की पत्तियों का उपयोग हाथी, भेड़ व बकरी के चारे के लिए भी होता है। पौधशाला में पीपल की कटिंग से पौध तैयार की जा सकती है। दो वर्ष की पौध रोपण योग्य उत्तम होती है। रोपण क्षेत्र में पीपल की डालियों को भी सीधे कलम द्वारा लगाकर वृक्ष तैयार किया जा सकता है।

4. **बरगद:**—बरगद के वृक्ष की आयु लगभग 80–90 वर्ष होती है। बरगद एक बहुत महत्वपूर्ण सदापर्णी प्रजाति है। यह पेड़ व्यापक रूप से हमारे यहाँ सड़कों, गांव–मन्दिरों, बाग–बगीचों में छाया के लिए उगाया जाता है। फूल एवं फल अप्रैल से जून के बीच आने शुरू हो जाते हैं, इसका फल गोल व पकने पर लाल होता है। यह वृक्ष परोपजीवी है। इसका बीज गिरकर उग जाता है। प्राचीनकाल में बरगद के पेड़ की छाया में अक्सर लोग इकट्ठे होकर मीटिंग या कार्यक्रम में भाग लेते थे। इस वृक्ष की छोटी डंडियाँ व शाखायें हाथी के भोजन व चारे के काम आती हैं।

5. **गूलर:**—गूलर के वृक्ष की आयु लगभग 50–60 वर्ष होती है। गूलर बड़ा पेड़ है, जिसकी ऊँचाई लगभग 15 मीटर तक हो सकती है। यह पेड़ छतनार है। इसका मुकुट जैसा छत्र बहुत ही सघन व फैला हुआ होता है। इसका फल खाया जाता है। इसके फलने के समय चिड़िया व अन्य पक्षी आदि बड़े चाव

से इसके फलों को खाते हैं। अगस्त से अक्टूबर तक के बीच इसका पतझड़ होता है। नयी पत्तियाँ जनवरी तथा उसके बाद आती हैं। गर्मी के मौसम में फूल आने शुरू हो जाते हैं।

6. **पाकड़ः**—पाकड़ के वृक्ष की आयु लगभग 60 वर्ष होती है। यह प्रजाति छायादार वृक्षों में सर्वोत्तम मानी जाती है। छत्र नीचा व फैला हुआ होता है। इसकी पैदावार रेतीली मृदा से लेकर गुजरात की कपास वाली काली मिट्टी तक में होती है। जाड़े के मौसम में पतझड़ आरम्भ हो जाता है और नयी पत्तियाँ बसन्त में आती हैं। फल फरवरी में आने लगते हैं और मई—जून में बीज पकने शुरू हो जाते हैं। स्वस्थ और मजबूत डालों से कलम को यदि सीधे ही खादयुक्त गड्ढों में लगाया जाये तो भी वो अधिकाधिक सफल हो जाता है। यह गर्म जलवायु वाले क्षेत्र के लिए बहुत उत्तम छायादार वृक्ष है। दो वर्ष की पौध रोपण योग्य उत्तम होती है। रोपण क्षेत्र में पाकड़ की डालियों को भी सीधे कलम द्वारा लगाकर वृक्ष तैयार किया जा सकता है।
7. **कदम्बः**—कदम्ब के वृक्ष की आयु लगभग 60—70 वर्ष होती है। मध्य ऊँचाई का मथुरा से सहारनपुर तक नदियों के किनारे मिलने वाला वृक्ष है। इसकी पत्तियाँ मवेशियों के लिए पुष्ट आहार होती हैं। इसकी लकड़ी लघु प्रकाष्ठ के रूप में प्रयोग होती है। यह वृक्ष कम वर्षा वाले क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।
8. **महुआः**—महुआ के वृक्ष की आयु लगभग 70—80 वर्ष होती है। यह वृक्ष बड़े आकार का तथा पर्णपाती होता है, इसकी छाया शीतलता प्रदान करने वाली होती है। पत्तियाँ 12 से 22 इंच लम्बी दीर्घ वृत्ताकार होती हैं तथा इनमें अप्रैल माह के अंदर गुच्छेदार फूल आता है। इसका फल गूदेदार होता है तथा पकने पर खाने के काम आता है। इसका फूल जनजाति के लोगों में अत्यन्त लोकप्रिय है तथा जनजाति के लोगों द्वारा इसके फूल से रोटी पकाकर खाई जाती है। इसके फल से नशीला पेय पदार्थ तैयार किया जाता है तथा इसकी लकड़ी अत्यन्त मजबूत व इमारती होती है जो भवन निर्माण में काम आती है। यह वृक्ष हिमालय के तराई क्षेत्र में तथा उत्तर प्रदेश,

बिहार, उड़ीसा, मध्य भारत, गुजरात व पंजाब में अधिकांशतः पाया जाता है। इसके बीज से तेल निकाला जाता है जो कभी-भी घी सदृश्य दिखाई पड़ता है। इसका तेल साबुन और मोमबत्ती बनाने में प्रयोग में आता है।

9. **शीशम:**—शीशम के वृक्ष की आयु लगभग 80–100 वर्ष होती है। शीशम एक अच्छी इमारती लकड़ी है। बीहड़ क्षेत्रों में इसका रोपण बीज बुवान द्वारा अथवा पौधशाला में पिण्डी या थैली में पौध तैयार कर किया जाता है। बीहड़ क्षेत्रों में टीलों पर तथा ऊँचे समतल क्षेत्रों में यह अच्छे ढंग से उगता है। पाले एवं सूखे जैसी विपरीत परिस्थितियों का भी आसानी से सामना कर लेता है।
10. **सिरस:**—सिरस के वृक्ष की आयु लगभग 40–45 वर्ष होती है। सिरस तेजी से बढ़ने वाली प्रजाति है। यह कई तरह की मिट्टी में उग सकता है। यहाँ तक कि ऊसर भूमि में भी यह उग सकता है। इस पेड़ की औसतन ऊँचाई 10–12 मीटर तक होती है। इसका रोपण सीधी बुवाई अथवा पौध को पॉलीथीन थैलियों में उगाकर किया जा सकता है। अच्छी मृदा में एक वर्ष में इनकी बढ़त 1 से 3 मीटर तक हो जाती है। एक वर्ष की थैली पौध रोपण योग्य हो जाती है।
- 11— **जामुन:**—जामुन के वृक्ष की आयु लगभग 50–60 वर्ष होती है। पूरे देश में जामुन एक सर्वसुलभ पेड़ है। यह नदी तट के पास जो भूमि बाढ़ से प्रभावित होती है व सड़कों के किनारे बहुतायत में रोपा जाता है। इसकी कापिस बहुत अच्छी होती है। इसका उपयोग खिड़की, दरवाजे, ईंधन तथा घरेलू आवश्यकता की पूर्ति हेतु किया जाता है। इसका फल जुलाई–अगस्त में पक जाता है। नर्सरी में बुवाई लाइनों में की जाती है, जिनमें 20 सेमी की दूरी रखी जाती है। नर्सरी में इसे थैली अथवा पिण्डी के रूप में उगाया जाता है। इसका सिरका अपच तथा बदहजमी में गुणकारी होता है।

नीम के लाभ (Benefits of Neem)

जड़	—	नीम की जड़ को ज्वरनाशक टॉनिक बनाने में प्रयोग किया जाता है।	
तना	(1)	छाल	नीम की छाल का प्रयोग ज्वररोधी, चर्मरोग नाशक और कफ विकाररोधी दवाओं में किया जाता है।
	(2)	स्राव	नीम के तने से एक विशेष प्रकार का स्राव निकलता है, जिसे अनेक प्रकार की औषधियों के निर्माण के प्रयोग में लिया जाता है। इसके अतिरिक्त लोग इस स्राव से ताड़ी भी बनाते हैं।
	(3)	लकड़ी	नीम की लकड़ी का प्रयोग भवन निर्माण, फर्नीचर निर्माण एवं ईंधन आदि में किया जाता है।
	(4)	टहनी	नीम की टहनियों को दातुन के रूप में प्रयोग में लिया जाता है।
	(5)	पत्तियाँ	नीम की पत्तियाँ चर्मरोगनाशक होती हैं, अतः इनका उपयोग बाम, मरहम, पुल्टिस लोशन आदि बनाने में होता है। नीम की पत्तियाँ कीटरोधी, पित्तनाशक, कृमिनाशक, ऐन्टीसेप्टिक, पीलियारोधी, आंत्रकृमिरोधी होती हैं, अतः इन्हें विभिन्न प्रकार की दवाओं के निर्माण में लिया जाता है। नीम की पत्तियाँ फोड़े-फुन्सी व अनेक प्रकार के घावों पर लगाने के काम में ली जा सकती हैं।
फल	—	नीम के फल पक्षियों के आहार, आंत्रकृमिरोधी, शोधक-प्रशामक में काम आते हैं। इसके फल का प्रयोग बवासीर की दवाई तथा अन्य मूत्रविकारों की दवाईयों बनाने में होता है।	
फूल	—	नीम के फूल स्फूर्तिदायक और उदर विकार नाशक होते हैं। इसके फूलों को ज्वरोपरान्त दिये जाने वाले टॉनिकों के निर्माण के प्रयोग में लिया जाता है।	
बीज	—	नीम के बीज भी कीटनाशक, कृमिनाशक, चर्मरोग नाशक होते हैं। इनका प्रयोग साबुन निर्माण तथा अन्य सौन्दर्य प्रसाधनों में भी किया जाता है। इसके बीज 'अल्सर' रोग में लाभकारी होते हैं तथा एल्कोहल के निर्माण में	

	भी सहायक होते हैं।
--	--------------------

क्या आप जानते हैं ?

आगरा में सूखा क्यों है ? आगरा में अल्पवर्षा क्यों है ?

आगरा में ओलावृष्टि क्यों ? आगरा में खारा पानी क्यों ?

यमुना में पानी मैला क्यों ? आगरा में तालाब, नदी-नाले सूखे क्यों ?

क्या आप जानते हैं कि इन सबका कारण "वनदेवी" का कुपित होना है। आगरा जिले में लोगों को सूखा, अल्पवर्षा, खारा पानी, गिरता भू-जल स्तर, सूखे नदी-नाले, रोग-बीमारी आदि का प्रकोप झेलना पड़ रहा है क्योंकि आगरा की जनता ने वनदेवी से प्रेम करना, उसकी पूजा करना बंद कर दिया है। अतः प्रत्येक व्यक्ति अपनी भूमि पर कम से कम दो पौधे नीम अथवा गूलर, पाकड़, बरगद, आंवला, पीपल आदि को उगाकर वनदेवी को उनमें स्थापित कर, प्रत्येक सप्ताह उसकी सिंचाई करते हुए रक्षा का संकल्प लें। इन सभी पेड़ों में किसी न किसी देवता का वास है। जैसे पीपल में विष्णु देवता, गूलर में नरसिंह देवता, बरगद में शंकर भगवान, ढाक में ब्रह्मा जी आदि। ये सभी देवी-देवता वनदेवी की प्रातः उठकर अराधना-पूजा करते हैं। दो वृक्ष लगाने से 200 व्रत, चार यज्ञ, दो तीर्थ, दो नहान, एक कुम्भ स्थान के बराबर पुण्य प्राप्त होता है। वृक्ष काटने से उस पर रहने वाली देवी-देवता कुपित हो जाते हैं।

अतः पाप के भागीदार न बनें, पुण्य कमायें। परिवार में सुख-सम्पत्ति, शांति बरसने लगेगी।

अब आप क्या चाहते हैं ?

रोगी या निरोगी ?

शान्ति या अशान्ति ?

समृद्धि या सूखा ? स्वयं विचार करें।

सौजन्य से:- सामाजिक वानिकी वन प्रभाग, आगरा

ओज़ोन परत संरक्षण में आप भी भागीदार बनिये, ओज़ोन परत को बचायें !!

- 1— ओज़ोन एक वायुमण्डलीय गैस है। यह ऑक्सीजन का एक प्रकार है। ऑक्सीजन के दो परमाणुओं के जुड़ने से ऑक्सीजन गैस बनती है, जिसे हम सांस लेते समय फेंफड़ों के अन्दर खींचते हैं। तीन ऑक्सीजन परमाणुओं के जुड़ने से ओज़ोन का एक अणु बनता है। ओज़ोन का रंग हल्का नीला होता है व इससे एक तीव्र गंध आती है।
- 2— ओज़ोन गैस ऊपरी वायुमण्डल (समताप मण्डल) में पृथ्वी से 15–60 किलोमीटर एक अत्यन्त पतली पारदर्शी परत के रूप में पाई जाती है। इस परत को ओज़ोन परत कहते हैं। ओज़ोन निचले वायुमण्डल (क्षोभ मण्डल) में, पृथ्वी की सतह से 15 किलोमीटर ऊपर तक भी अल्प मात्रा में पाई जाती है।
- 3— समताप मण्डल में स्थित ओज़ोन परत समस्त भूमण्डल के लिए सुरक्षा कवच का काम करती है। यह सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणों को ऊपरी वायुमण्डल में ही रोक लेती है और उन्हें पृथ्वी की सतह तक नहीं पहुँचने देती। पराबैंगनी विकिरण सारे प्राणी-जगत के लिए बहुत ही हानिकारक है। पृथ्वी पर इसी परत के कारण जीवन का अस्तित्व सम्भव हो सका है।
- 4— मानवजन्य रसायनों द्वारा हो रहे वायुमण्डलीय प्रदूषण के फलस्वरूप समताप मण्डल में ओज़ोन गैस की मात्रा निरन्तर घट रही है और ओज़ोन परत का घनत्व भी कम हो रहा है। इस प्रक्रिया को ओज़ोन क्षय कहते हैं। वे रसायन जिनसे ओज़ोन क्षय होता है, उन्हें ओज़ोन अवक्षय रसायन कहते हैं। जैसे—क्लोरोफ्लोरोकार्बन सानि सीएफसी व हेलोन। मिथाइलब्रोमाइड, मिथाइलक्लोरोफॉर्म, कार्बन टेट्राक्लोराइड आदि।
- 5— सीएफसी का उपयोग फ्रिज, वातानुकूलन व अन्य शीतलन यंत्रों में प्रशीतलक के रूप में, फोम बनाने में, टी.वी. कम्प्यूटर व अन्य इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों के परिपथों की सफाई में विलायक (सॉल्वेन्ट) के रूप में, विभिन्न स्प्रे उपकरणों में नोदक (प्रोपेलेन्ट) के रूप में होता है।
- 6— उपकरणों के निर्माण, परीक्षण व मरम्मत के समय यंत्रों से सीएफसी गैस का रिसाव वायुमण्डल में होता है। अपनी रासायनिक अक्रियता के कारण ये नष्ट नहीं होती बल्कि

धीरे-धीरे ऊपर उठती हुई 5-7 वर्षों में समताप मण्डल तक पहुँच जाती है। यहाँ सूर्य की पराबैंगनी किरणें इन्हें छिन्न-भिन्न कर देती हैं और क्लोरीन अणु मुक्त हो जाते हैं। ये क्लोरीन अणु ओज़ोन अणुओं को रासायनिक प्रक्रिया द्वारा नष्ट करते हैं। एक क्लोरीन अणु कई हजार ओज़ोन अणुओं को नष्ट करने की क्षमता रखता है।

- 7— जब समताप मण्डल में ओज़ोन अणु नष्ट होते हैं, तब ओज़ोन परत का घनत्व भी कम होता है। जिससे अत्यधिक मात्रा में पराबैंगनी किरणें पृथ्वी की सतह तक पहुँच जाती हैं। कुछ प्राकृतिक घटनाएँ: जैसे-ज्वालामुखी का फटना आदि से प्रचुर मात्रा में सल्फर डाईऑक्साइड जलवाष्प निकलती है, जो समताप मण्डल तक पहुँचकर ओज़ोन अवक्षय को बढ़ावा देती है।
- 8— पराबैंगनी किरणों से मनुष्यों में त्वचा कैंसर, मोतियाबिन्द, रोग-प्रतिरोधक क्षमता में कमी, डी.एन.ए. में अवांछित विकास उत्पन्न होने से बच्चों में विकलांगता प्रकट हो सकती है।
- 9— पराबैंगनी किरणों से पत्तियों का आकार छोटा होगा, अंकुरण में अधिक समय लगेगा, महत्वपूर्ण फसलों की पैदावार में कमी आयेगी।
- 10— पराबैंगनी किरणों से छिछले पानी में उगने वाली घास (पाद प्लवक) नष्ट होगी, जिसके फलस्वरूप मछली उत्पादन में कमी आयेगी।
- 11— इन किरणों के कारण कपड़ों आदि का रंग जल्दी ही उड़ जायेगा व धूप में रहने वाली वस्तुएँ जैसे धातु की नालियाँ, फर्नीचर आदि जल्द खराब होंगी।
- 12— ओज़ोन क्षय के दुष्प्रभाव विश्वव्यापी होंगे अपितु पृथ्वी के कुछ भागों पर इसका सीधा असर पड़ेगा। जैसे-प्रति वर्ष सितम्बर-अक्टूबर में दक्षिणी ध्रुव के ऊपर लगभग 50-95 प्रतिशत ओज़ोन क्षय होता है, जिससे परत में दरारें या छेद बन जाते हैं। दक्षिणी ध्रुव में स्थित कुछ देश जैसे-ऑस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमरीका का दक्षिणवर्ती भाग, दक्षिणी अफ्रीका व न्यूज़ीलैण्ड आदि ओज़ोन क्षय से अधिक प्रभावित होने वाले क्षेत्र हैं। ओज़ोन अवक्षय का दुष्प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सारी पृथ्वी पर पड़ेगा।

ओज़ोन अवक्षय रसायनों के उत्पादन व खपत पर विश्वव्यापी रोक लगाना ओज़ोन क्षय रोकने की दिशा में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम होगा। सीएफसी के स्थान पर अन्य रसायनों का उपयोग कर इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। वर्तमान में सीएफसी के स्थान पर एचसीएफसी व एचएफसी का उपयोग हो रहा है। सीएफसी व अन्य ओज़ोन अवक्षय रसायनों का उपयोग न करने वाली प्रणाली भी ओज़ोन क्षय रोकने में योगदान कर सकती है।

आइए देखें, आप व हम ओज़ोन परत संरक्षण के लिए क्या कर सकते हैं ?

- 1— 'ओज़ोन मित्र' उपभोक्ता बनें। वस्तुएँ (ऐरोसोल स्प्रेकैन, फ्रिज, एयरकंडीषनर आदि) खरीदते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह ओ.डी.एस. (ओज़ोन अवक्षय पदार्थ) मुक्त हों। अपने पड़ौसियों को भी बतायें कि वे भी ओज़ोन मित्र वस्तुएँ ही खरीदें।
- 2— 'ओज़ोन मित्र' गृहस्वामी बनें। पुरानी फ्रिज, रेफ्रीजरेशनस, अग्निशमन यन्त्रों को हटाने से पूर्व सी.एफ.सी., एच.सी.एफ.सी. की रीसाइक्लिंग कराए। कुशल कारीगर से ही इसकी रिपेयरिंग करायें। निरन्तर जांच करें। लीकेज होने पर तत्काल रिकवरी / रीसाइकिल करायें।
- 3— 'ओज़ोन मित्र' कृषक बनें। ओज़ोन मित्र कीटनाशकों जिसमें मिथाइल ब्रोमाइड न हो का ही प्रयोग करें।
- 4— 'ओज़ोन मित्र' सामुदायिक संगठनकर्ता बनें। अपने परिवार, पड़ौसी और मित्रों को ओज़ोन परत के संरक्षण की आवश्यकता समझायें और उन्हें सहभागी बनायें।
- 5— 'ओज़ोन मित्र' नागरिक बनें। व्यक्तिगत रूप से सहभागी बनने हेतु ओज़ोन क्षरण के प्रभाव, मॉड्रियल प्रोटोकॉल, अपने देश की नीति व रणनीति के संबंध में जानकारी प्राप्त कर खूब पढ़ें, सीखें और लोगों को बतायें।
- 6— 'ओज़ोन मित्र' शिक्षक बनें। विद्यार्थियों को इस संबंध में जानकारी दें और उन्हें अपने परिवार, मित्र व पड़ौसियों को ओज़ोन परत संरक्षण का संदेश पहुंचाने हेतु उत्साहित करें।
- 7— 'ओज़ोन मित्र' कम्पनी बनें। अपने उद्योगों में ओज़ोन अवक्षय पदार्थों के इस्तेमाल के चरणबद्ध ढंग से रोकने हेतु कार्यवाही करें। ओज़ोन अवक्षय रसायनों का उपयोग न करने वाली प्रणाली अपनायें।
- 8— फोम से बने तकियों और गद्दों की जगह परम्परागत रुई के तकियों और गद्दों का ही प्रयोग करें।
- 9— स्टाइरोफोम से बने गिलास और प्लेटों के स्थान पर मिट्टी के बर्तन, स्टील के प्लेट और कांच के बर्तनों का प्रयोग करें।
- 10— ओज़ोन अवक्षय पदार्थों से युक्त स्प्रेकैन, स्प्रे-पंपों का प्रयोग न करके परम्परागत साधनों जैसे हस्तचलित स्प्रे-पंपों आदि का इस्तेमाल करें।

यद्यपि समतापमण्डल में ओज़ोन की मात्रा अत्यन्त क्षीण है, फिर भी धरती पर जीवन के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसकी तुलना आप 'नमक' से कर सकते हैं, जो व्यंजनों में बस

जरा सा पड़ता है परन्तु खाने का पूरा स्वाद इसी से आता है और इसके बगैर खाना फीका हो जाता है।

वन विभाग, उत्तर प्रदेश का वृक्षों को काटने की अनुमति प्रदान करने के सम्बन्ध में निर्गत शासनादेश दिनांक 4 मई, 2009

- 1- पूरे प्रदेश में पूर्णरूपेण प्रतिबन्धित आम की प्रजाति को 4 वर्ष की अवधि (वर्ष 2008-2012 तक) के लिए काटने की अनुमति प्रदान की गयी है।
- 2- पूरे प्रदेश में अगस्त, जंगल-जलेबी, पॉपुलर, बकैन, विलायती बबूल, बबूल, यूकेलिप्टस, रोबिनियां, सिरस, सू-बबूल, जामुन, ढाक-पलाश, पेपर मर्लबेरी, बेर, सहजन, शहतूत एवं आंवला जैसी प्रजातियों को छूट प्रजाति के रूप में घोषित किया गया है। अतः कोई भी कृषक व्यक्तिगत कृष्य या अकृष्य जोत पर इन वृक्षों को बिना अनुमति के काट सकता है। इसे वन विभाग की वैबसाइट <http://forest.up.nic.in> पर भी अपलोड कर दिया गया है।